Edit with WPS Office

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

रामायण में अहिल्या का चरणस्पर्श या राम का

नाम --डॉ० विभा माधवी

शोध छात्रा

बी० आर० अंबेडकर, बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

रामायण हमारे देश का एक महत्वपूर्ण महाकाव्य है। इसका आदर्श समाज में सबसे ज्यादा मान्य है। राम-सा आज्ञाकारी पुत्र और विशाल हृदय राजा, लक्ष्मण और भरत सरीखा भाई, सीता जैसी धर्मपरायणा पत्नी, हनुमान-सा भक्त और सेवक होना गौरव की बात समझी जाती है। रामायण में सीता के साथ-साथ कई स्त्रियाँ महत्वपूर्ण भूमिका में रही हैं। उनमें कैकेयी, मंथरा, उर्मिला, मंदोदरी, तारा, शूर्पणखा, त्रिजटा, शबरी, अहिल्या, तारका इत्यादि सबों की अपनी भूमिका रही है और सभी अपनी भूमिका में महत्वपूर्ण है।

प्रचलित मान्यता के अनुसार समाज में अहिल्या को एक पतित और स्खलित नारी के रूप में देखा जाता है, लेकिन वाल्मीकि रामायण में अहिल्या को वाल्मीकि जी की पूर्ण संवेदना मिली है, जो संवेदना तुलसीदास जी नहीं दे पाये।

" वाल्मीकि रामायण" के अनुसार अहिल्या न तो पति के शाप के कारण शिला का रूप लेती है और ना ही राम के पद स्पर्श से वह पुनः अपने पूर्व रूप में लौटती है। वह अपकीर्ति का भार ढ़ोते-ढ़ोते पाषाण सदृश हो जाती है। अपनी गलती को महसूस कर शर्म और लज्जा से पत्थर सदृश हो जाती है और वर्षों प्रायश्चित एवं उपेक्षित जीवन जीती है। परंतु राम के चरणस्पर्श करने से, उनके द्वारा सम्मान दिये जाने से उनका पाषाण सदृश्य हृदय सम्मान मिलते ही पुनः मानवीय संवेदना से युक्त हो जाता है और वह पुनः अपनी गरिमा को प्राप्त करती है। मनुष्य सदृश्य मनुष्य पत्थर बन जाए और वर्षों तक पड़ा रहे यह तो पौराणिक कल्पना ही है। काल-संदर्भ से यह बात उचित नहीं जान पड़ती। महाकवि वाल्मीकि अहिल्या और राम मिलन के इस प्रश्न का वर्णन मानवीय दृष्टि से करते हैं। जो कुछ हुआ, वह इष्ट नहीं था, फिर भी वह मानव-सहज होने के कारण अक्षम्य नहीं था। इस प्रसंग को लेकर रामायणकारों तथा लोककवियों ने खूब ऊँची उड़ान भरी है तथा माधुर्यमय माना है।

"वाल्मीकि रामायण" वर्णित यह कथा बड़ी हृदयस्पर्शी बन गयी है। उसमें कहीं भी चमत्कार का अंश नहीं है। यहाँ महामानव राम जिस प्रकार अहिल्या को सम्मान देते हैं, यह उनके मर्यादा पुरुषोत्तम के गौरव के अनुकूल है। विश्वामित्र कहते हैं:- "एक समय इस स्थान पर गौतम ऋषि का निवास था। उस समय आश्रम बहुत ही दिव्यता से परिपूर्ण था। महात्मा गौतम अपनी पत्नी अहिल्या के साथ रहते और तपस्या करते थे। अनेक वर्षों तक उनकी तपस्या चलती रही। एक दिन गौतम ऋषि जब अपने आश्रम पर थे, तो मौका पाकर इन्द्र गौतम ऋषि का रूप धारण कर उनके आश्रम में पहुंचे और अहिल्या के साथ समागम किया। समागम करके ज्यों ही इन्द्र कुटी से बाहर निकले महात्मा गौतम आ ना जाएँ, इस आशंका के कारण इंद्र ने वहाँ से वेगपूर्वक भागना शुरू किया। इतने में ही तपस्वी महामुनि गौतम हाथ में समिधा लेकर आश्रम में प्रवेश करते हैं। उनका शरीर तीर्थ जल से भीगा था। वे प्रज्ज्वलित अग्नि की तरह दीप्तमान हो रहे थे। उन्हें देखते ही इन्द्र भय से काँपने लगा और चेहरे पर विषाद छा गया। दुराचारी इन्द्र को अपना वेष धारण किया हुआ देखकर मुनिवर गौतम ने उसे शाप देते हुए कहा:- "तूने मेरा रूप धारण करके जो पापकर्म किया है, इसलिए तू निवीर्य हो जाएगा।' गौतम मुनी के ऐसा कहते हैं इंद्र के दोनों अंडकोष तत्काल ही धरती पर गिर पड़े।

इन्द्र को शाप देने के बाद गौतम ने अपनी पत्नी अहिल्या को भी शाप दिया- "तू भी यहाँ हजारों वर्षों तक केवल हवा पीकर या उपवास करके कष्ट भोगती हुई राख में पड़ी रहेगी। इस आश्रम में तुम अदृश्य बनकर पड़ी रहेगी। जब दशरथ पुत्र राम इस वन में आयेंगे तब तेरी पवित्रता लौटेगी। उनका आतिथ्य सत्कार करने से तुम्हारा दोष मिट जाएगा और तुम मुझे प्राप्त करके अपना पूर्व शरीर धारण करेंगी। यह कहकर महर्षि गौतम आश्रम छोड़कर चले गए और हिमालय के रमणीय शिखर पर निवास करके तपस्या करने लगे।

विश्वामित्र के कहने पर की हे राम! "अब तुम महर्षि गौतम के आश्रम में प्रवेश करो उस महाभाग देवी अहिल्या का उद्धार करो।

Edit with WPS Office

(तारयैनाम् महाभागामहल्या देवरूपिणीम्)।"

विश्वामित्र के कहने से लक्ष्मण सहित राम आश्रम में प्रवेश करते हैं। वहाँ जाकर उन्होंने देखा कि सौभाग्यशालिनी अहिल्या अपनी तपस्या से देदीप्यमान दिखाई पड़ रही है।

(ददर्श च महाभागम् तपसा द्योतित प्रभाम)।

वाल्मीकि द्वारा इस तपस्विनी अहिल्या का अद्भुत वर्णन किया गया है-

"उसका स्वरूप दिव्य था। विधाता ने बड़े प्रयत्नपूर्वक उसके अंगों का निर्माण किया था। वह मायामयी सी लग रही थी। वह धुँए से घिरी प्रज्वलित अग्निशिखा-सी जान पड़ती थी। वह तुषार एवं बादलों से आवृत पूर्णचंद्र प्रभा-सी दिखाई पड़ती थी तथा जल में उद्भासित सूर्य की अपराजेय प्रभा के समान वह शोभा दे रही थी।

शापमुक्ति के क्षणों में सामने आकर खड़ी तेजस्वी, ओजस्वी और तपस्विनी अहिल्या का ऐसा वर्णन वाल्मीकि जी ही कर सकते हैं। जब अहिल्या राम के सामने आकर खड़ी होती है, तब राम और लक्ष्मण दोनों प्रसन्नतापूर्वक अहिल्या के चरण छूते हैं। वाल्मीकि रामायण के राम का मर्यादा पालन करने में कोई सानी नहीं है। अध्यात्म रामायण के राम तो भगवतस्वरूप ही हैं, मानवरूप में नहीं हैं, लेकिन उसमें भी अहिल्या को देखकर राम प्रणाम करते हैं।

(दृष्टाहल्यां नमस्कृत्य)।

वाल्मीकि रामायण की अहिल्या तुच्छ, पतिता नहीं है, किंतु वह तेजस्विनी देवी है। राम-लक्ष्मण द्वारा चरण स्पर्श किए जाने के बाद वह अपने पति के वचनों का स्मरण करके दोनों भाइयों का आतिथ्य सत्कार करती है। सब कुछ मन के अनुकूल हो जाता है। अपनी तपस्या से शुद्ध (तपोबल विशुद्धाम्मीम्) रूप को प्राप्त होती है और फिर से अपने पति गौतम ऋषि की प्रीति पात्र बन जाती है। गौतम भी उसे पाकर सुख अनुभव करते हैं। जहाँ भूल होती है और भूल का स्वीकार हो और उस भूल का प्रायश्चित, तप हो, वहाँ सूक्ष्म रूप में रामत्व उपस्थित रहता है, क्योंकि वहाँ अपूर्ण मनुष्यता का रथ भी धरती से छह अंगुल ऊपर अधर में चलता प्रतीत होता है।

अहिल्या आज भी जीवित है। अहिल्या को थोड़ी अधिक गहरी संवेदना के साथ समझने की आवश्यकता है। भारतीय नारी के साथ हुए घोर अन्याय को सामने रखने वाले कथानक अनेक है, अन्याय किस लिए??? तुलसीदास जी कहते हैं कि ताड़का वध के पश्चात राम-लक्ष्मण उस आश्रम में पहुँचते हैं जहाँ महातपस्वी गौतम की पत्नी अहिल्या थोड़ी देर के लिए इंद्र की पत्नी बन चुकी थी। ऐसे स्खलन की इतनी कठोर सजा। राम का आगमन हुआ और अहिल्या की अपनी चेतना पुनः लौट आयी। उनके शब्द है:- "पत्थर बन चुकी गौतम-पत्नी ने पुनःअपना सुंदर रूप प्राप्त किया। राम के चरणों की धूल का प्रताप था कि जिसके स्पर्श से यह सब हुआ।"

वाल्मीकि की अहिल्या तपस्वी गौतम के अभिशाप के बाद पाषाण तो नहीं होती, फिर भी उसका जीवन-पथ लगभग पाषाण पथ बन गया था। पाषाण में प्रच्छन्न रूप से छिपा होता है, जो प्रदग्ध करने वाला होता है। इसलिए कह सकते हैं कि उसका पाषाण-पथ भी वास्तव में अग्नि-पथ का रूप ले चुका था। क्या अहिल्या के साथ अन्याय नहीं हुआ? इंद्र के साथ समागम करना यह अवश्य ही स्खलन है उसका, पर इस मानव सहज स्खलन की इतनी बड़ी सजा? समाज में ऐसे कई व्यभिचारी राजा एवं पुरुष हैं, जिन्हें उनके अपराधों की ऐसी कठोर सजा कभी नहीं मिली।

पुरुषप्रधान समाज में पुरुषों के अमर्यादित और कभी-कभी तो त्रासद व्यभिचारों के लिए भी सजा का विधान नहीं होता, जबकि नारी की एकाध भूल भी क्षम्य नहीं मानी जाती है।

यदि पुरुषों, ऋषयों, राजाओं तथा राक्षसों को विवाहोत्तर कामतृप्ति के बदले में पाषाण रूप हो जाने की सजा का विधान होता तो भारतवर्ष की गली -गली में पाषाणों की ढेर पड़े मिलते। आज भी स्थिति यह है कि पुरुष सारे पाप करता है, तो भी छूट जाता है और नारी को भोगना पड़ता है। यदि भारतीय परंपरा की इस नाजुक सिरा को दबाया जाए तो असंख्य स्त्रियों के साथ हुए अन्याय की पुराणकथाएँ जीवंत हो जायेंगी। रामायण की कथा भी इस अन्याय का अपवाद नहीं है।

प्रत्येक स्त्री से सतीत्व की अपेक्षा रखी जाती है। सतीत्व का संबंध पति-परायणता के साथ और पति-परायणता का संबंध पति के प्रति एक एकांतिक निष्ठा से जुड़ा होता है। वाल्मीकि द्वारा निरूपित अहिल्या प्रकरण में कवि की क्रांति-दृष्टि के दर्शन होते हैं। इस प्रसंग का चरमोत्कर्ष तो तब आता है जब राम लक्ष्मण उनका चरणस्पर्श करते हैं। वाल्मीकि की इस विचार क्रान्ति को समझने के लिए, इस संबंध में तुलसीदास की पंक्तियों को भी साथ रखकर पढ़ना चाहिए:-

गौतम नारि शाप बस, उपल देह धरि धीर।

चरन कमल रज, चाहति कृपा करहु रघुवीर।।

गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या को इंद्र ने कपट वेश धारण करके छला था। हे रघुवीर, उस शापग्रस्त नारी को अपनी चरण रज प्राप्त करने का

Edit with WPS Office

अवसर देकर उसका उद्धार करने की कृपा कीजिए। अहिल्या को जिस समय राम के चरण का स्पर्श हुआ, उसी क्षण उसका शोक दूर हो गया और वह तपोपुंज होकर प्रकट हुई।

यह बात जरा विचार माँगती है। वाल्मीकि के परवर्ती, शताब्दियाँ व्यतीत हो जाने के बाद जन्मे तुलसीदास जी कहते हैं कि राम के चरणस्पर्श करने से शिला बनी अहिल्या का उद्धार हुआ है। यह कथन वाल्मीकि के कथन से भिन्न है। दोनों में चरणस्पर्श का उल्लेख हुआ है, यह सही है, पर दोनों चरणस्पर्शों में जमीन आसमान का अंतर है। वाल्मीकि के राम अहिल्या का चरणस्पर्श करते हैं, यहाँ चरणस्पर्श सिर्फ चरण का स्पर्श भर नहीं है यह अहिल्या को सम्मान देने का सूचक है। राम द्वारा सम्मान प्राप्त होने के बाद पश्चाताप की अग्नि में झुलसी अहिल्या, लोगों की उपेक्षा एवं निंदा की शिकार अहिल्या का पाषाण हो चुका हृदय पिघलने लगता है और वह मानवीय स्वरूप ग्रहण करती है, जबकि मानस के राम का चरणस्पर्श अहिल्या करती है। एक के राम महामानव है जबकि दूसरे के परमब्रह्म स्वरूप।

अध्यात्म रामायण में भी अहिल्या राम के चरणस्पर्श करती है:-

तव पादरजः स्पर्शम कांक्षते पवनाशना।

आस्तेयद्यपि रघुश्रेष्ठ तपो दुष्करमास्थिता।। 5.34

विश्वामित्र कहते हैं- हे रघुवीर! उस दिन से यह अहिल्या पवन का आहार करती हुई, तुम्हारे चरण-स्पर्श की मनोकामना के साथ कठोर तपस्या में निरत है।" इतना कहकर ऋषि आग्रह करते हैं:- "हे राम! अब तुम गौतम पत्नी का उद्धार करो।" वाल्मीकि के यहाँ अहिल्या तुच्छ नहीं है। पुनः कहना चहूँगी कि राम अहिल्या का चरण स्पर्श करते हैं, यह बात वाल्मीकि ही लिख सकते हैं। गौतम ऋषि भी अन्य पतियों की तुलना में कुछ ऊपर उठे हुए हैं। उनका क्रोध भी सहज मानवीय स्वभाव की परिणति कहा जाएगा। वे क्रोध वश अहिल्या को अभिशापित तो करते हैं, किंतु कठोर तपस्या करके अन्ततः पवित्र हो चुकी अहिल्या राम से मिलती है तो गौतम भी हिमालय का शिखर-वास छोड़कर पुनः अपने आश्रम लौट आते हैं और अहिल्या को पाकर सुखी होते हैं। पत्नी को क्षमा करते हुए, उसे विस्मृत करना और खासा समय बीत जाने के बाद पुनः घर बसाने का उपक्रम करना बहुत कम पतियों के वश की बात है।

सारांश इतना ही है कि वाल्मीकि की दृष्टि में अहिल्या का स्खलन सहज मानवीय स्वभाव का हिस्सा है, गौतम की क्षमा उद्दात्त है और राम का विवेक लोकोत्तर है।

हे अहिल्या!

नहीं तू तुच्छ और नहीं शल्या।

शाप और ताप की मार सहकर,

अपकीर्ति का भार ढोकर,

अपनी भूल को स्वीकार कर,

तथा

प्रायश्चित से पार होकर

तूने अपने पाषाण-पथ का

अग्नि-फूलों से श्रृंगार किया है।

संसार में तो सभी लोग भूल करते हैं। भूल ही तो उसे मनुष्य बनाये हुए है, पर भूल करने वाले असंख्य लोगों में, बहुत कम ऐसे मिलेंगें जो अपनी भूल को स्वीकार कर लें और भूल का प्रायश्चित करने वाले उससे भी कम।

हम नहीं जानते कि आने वाली शताब्दियों में मनुष्य का अनागत कैसा होगा?? परंतु एक बात तो निश्चित है कि आने वाले युगों में भी ऐसा व्यक्ति नहीं जन्म लेगा जो भूल नहीं करें। भूल होना या करना मनुष्य होने की सर्वाधिक विश्वसनीय पहचान है। जहाँ तक इस धरा-धाम पर मनुष्यता साँस लेती रहेगी, तब तक भूल-प्रसंग भी बराबर जीवित रहेंगे। हे अहिल्या! यदि मानवीय भूल इतनी प्राचीन एवं सनातन है तो तू अमर है।

Edit with WPS Office

संदर्भ:-

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण:- बालकाण्ड उनचासवां सर्ग

अध्यात्म रामायण:- बालकाण्ड

रामचरितमानस:- बालकाण्ड

रामायण: मानवता का महाकाव्य:- गुणवंत शाह